पर्यावरण की रक्षा के लिए जरूरी है सकारात्मक चेतना-वेदव्यास

प्रकृति के साथ सदभावपूर्ण जीवन पर वैज्ञानिक एवं अभियन्ताओं का सम्मेलन शुरू

आबू रोड, 26 जून, निसं। प्रकृति में बढ़ता असंतुलन मनुष्य के जीवन के लिए खतरनाक होता जा रहा है। वैज्ञानिकों द्वारा नयी-नयी खोज होना जरूरी है परन्तु प्रकृति की रक्षा करना उससे भी ज्यादा जरूरी है। मनुष्य के जीवन के लिए स्वच्छ हवा और पानी जरूरी है इसलिए बिगड़ते पर्यावरण की रक्षा के लिए जरूरी है सकारात्मक चेतना। उक्त विचार इंन्द्रप्रस्थ गैस लिमिटेड दिल्ली के प्रबन्ध निदेशक राजेश वेदव्यास ने व्यक्त किये। वे शांतिवन में प्रकृति के साथ सदभावपूर्ण जीवन समय की मांग विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय वैज्ञानिक, अभियन्ताओं एवं पर्यावरणविदों के सम्मेलन में आये अतिथियों को सम्बोधित कर रहे थे।

आगे उन्होंने कहा कि हमारी कम्पनी भी पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के लिए सरकार के साथ कार्य कर रही है। दिल्ली में सीएनजी गैस के जरिये वायु प्रदूषण को काफी हद तक नियंत्रित किया गया है। जरूरत है कि इसी तरह का प्रयास पूरे भारत में किये जाये जिससे पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सके। उन्होंने लोगों से अपने विचार को प्रकृति की रक्षा के प्रति जागरूक बनाने की सलाह दी। यदि हम स्वस्थ रहना चाहते है तथा परिवार को स्वस्थ रखना चाहते है तो उसके लिए पर्यावरण की रक्षा करना बहुत जरूरी है। आज पूरे विश्व में दिन प्रतिदिन घट रही प्राकृतिक उतार-चढ़ाव की घटनाओं के लिए खुद ही जिम्मेदार है। इसलिए इसके प्रति जागरूक होना समय की मांग है।

पर्यावरण श्री पुरस्कार से सम्मानित तथा कार्यक्रम संयोजक पर्यावरणविद मोहन सिंघल ने कहा कि हमें प्रकृति के साथ सदैव सदभावपूर्ण रवैय्या अपना चाहिए। यह सिलसिला केवल प्रकृति के साथ ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी और जीव जन्तुओं के प्रति भी रखने की आवश्यकता है। उन्होंने पर्यावरण प्रदूषण बचाव के लिए लगाये गये मेले के बारे में बताते हुए कहा कि इस मेले तथा सम्मेलन का उद्देश्य प्रकृति की रक्षा के लिए जागृति लाना है। जिससे पर्यावरण के बढ़ते खतरे को कम किया जा सके।

उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग के विशेष सचिव एन एस कुशवाहा ने कहा कि जिस नियम को हम अपना मानते है वह सही नहीं है। यही कारण है कि इतना सब कुछ करने के बावजूद हम परिस्थितियों से घिरते जा रहे हैं। परमात्मा का प्रकृति के लिए बनाये गये नियम सर्व जगत के लिए कल्याणकारी है। इसलिए हमें परमात्मा के बनाये गये नियमों पर चलने से सभी समस्याओं से मुक्त हो जायेंगे।

वैज्ञानिक एवं अभियन्ता प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र0 कु0 सरला ने कहा कि जैसा हम सोचते है प्रकृति पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ता है। इसलिए हमारा प्रकृति के लिए सोच सकारात्मक होना चाहिए। जब हम प्रकृति का सहयोग करेंगे तभी प्रकृति भी हमारा सहयोग करेंगी। आईओई ऊर्जा इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के वरिष्ठ प्रोजेक्ट विकासअधिकारी मुम्बई के क्लाउस पीटर हंकेल ने प्रकृति के लिए सभी अतिथियों से बचाने का आह्वान किया। प्रभाग के कार्यकारी सदस्य भारत भूषण ने स्वागत भाषण किया तथा शांतिवन के प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र0 कु0 भरत ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। दिल्ली से आये जवाहर मेहता ने राजयोग के अभ्यास के अनुभव सुनाये। कार्यक्रम का संचालन भिलाई की ब्र0 कु0 माधुरी ने किया।

यह सम्मेलन तीन दिन तक चलेगा। इसमें भारत, नेपाल के कोने-कोने से 800 वैज्ञानिक, अभियन्ता, पर्यावरणविद भाग ले रहे हैं।

फोटो, 26एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5 सम्मेलन का दीप जलाकर उदघाटन करते अतिथि, सभा को सम्बोधित करते राजेश वेदव्यास।